Chapter-3

तृतीय अध्याय

शिवानी के उपन्यास साहित्य में वस्तु और शिल्प:

काव्य के प्राय: दो पक्ष होते हैं । वस्तु पक्ष और शिल्प या कलापक्ष । वस्तु का सम्बन्ध रचना के भीतरी या आत्म-पक्ष से होने के कारण उसे अन्तरंग भी कहा जाता है । शिल्प याने रचना का बाहरी पक्ष शरीर की रूप रचना, जिसके कारण उसे बहिरंग भी कहा जाता है । इसके अध्ययन के द्वारा किसी भी साहित्यकार की कलात्मक प्रतिभा को देखा-परखा जा सकता है । साहित्यकार अधिक संवेदनशील, वाग्विदग्ध एवम् बौद्धिक चेतना सम्पन्न प्राणी है । अतएव वह अपने अनुभूतिय सत्यों तथा तथ्यों का कोरा अंकन ही नहीं करता अपितु उन्हें और भी अधिक सम्प्रेष्य, रसग्राह्य एवं रमणीय रूप प्रदान करने के लिये अभिव्यंजना-शिल्प अथवा कला के बिविध उपादानों तथा भाषा शैली, अलंकार, बिम्ब प्रतीक, आदि का सम्यक् और सुष्ठु प्रयोग भी करता है ।

उपन्यास के शिल्प-विधान का बिषय से दृढ सम्बन्ध रहा है । शिल्पविधान का परिवर्तन प्राय: विषय के स्वरूप के परिवर्तन से सम्बन्धित रहा है और विषय के स्वरूप पर सामाजिक जीवन तथा विचार धाराओं के परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा है । हिन्दी उपन्यास के आरम्भ काल में भी यथार्थ और कल्पना की धाराएँ प्रवाहित रही हैं । लाला श्री निवासदास, बालकृष्ण भट्ट और राधाकृष्णदास के उपन्यासों में जीवन के यथार्थ अधिक थे, तो

देवकीनन्दन खत्री में कल्पना का रंग गाढा था और किशोरी लाल गोस्वामी के "चपला", "कुसुम कुमारी" जैसे उपन्यासों में यथार्थ और कल्पना दोनों का समन्वय देखने मिलता है । बाद के यथार्थवादी उपन्यासों में घटनाचक्र की जो विचित्र गति और जो अतिरंजन मिलते हैं वे सब स्वच्छन्दतावाद से प्राप्त हैं । मनोविज्ञान की यथार्थ भूमि पर आये हुए इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों तक में स्वच्छन्द कल्पना प्राप्त है । किंतु यथार्थोन्मुखता ही उपन्यास की सामान्य प्रवृत्ति रही है । इसे स्पष्ट करते हुए डॉ० गणेशन ने लिखा है, "केवल प्रेमचन्द के उपन्यासों को ही लें और कालक्रम से उनका अध्ययन करें तो स्पष्ट होगा कि लेखक का दृष्टिकोण जीवन के अध्ययन के प्रति कैसे अधिकाधिक सचेत होता आया है । इसके बाद मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार व्यक्ति को समझने और उसकी मानसिक ग्रन्थियों को सुलझाने लगे, तो सामाजिक यथार्थवादी समाज की सामान्य प्रवृत्तियों और उसके ह्रास-विकासों को दिखाने में सतत प्रयत्नशील रहें ।"[1] अतः यह सच है कि वस्तु सामाजिक पृष्ठभूमि पर ही निर्भर है इसका समर्थन करते हुए नन्द दुलारे बाजपेयीजी भी करते हैं कि "उपन्यास में पग पग पर जीवन की वास्तविक स्थिति और पात्रों की प्रगति का उल्लेख करना पडता है।"[2] इस प्रकार कथावस्तु का उतना ही महत्व होता है जितना कि शरीर में आत्मा का। उपन्यासकार का बहुत कुछ कौशल उसके कथानक के चुनाव में है । उपन्यास का कथानक घटनाओं का संकलन मात्र ही नहीं है । घटनाओं को कार्यकारण की श्रृंखला में बांधकर सुसम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करना होता है । वस्तुतत्व की यही श्रृंखलाबद्धता को

1- "हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन"-डॉ०गणेशन - पृ० 131
2- "प्रेमचंद साहित्यिक विवेचन"- नंददुलाने बाजपेयी- पृ०83

अँग्रेजी में "प्लोट" कहा जाता है । इसलिए अरस्तु ने "प्लोट" के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है, "प्लोट" के बिना उपन्यास की रचना संभव नहीं हो सकती, चरित्र के बिना यह भले ही संभव हो जाए । किसी भी कथानक की पूर्णता उसके कथाकृति में उपस्थित किए गए रूप पर निर्भर होती है । डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने भी लिखा है कि "बहुधा कथानक की व्याख्या करते समय कहा जाता है कि कथानक घटनाओं या कार्य-कलापों के संकलन के संचयन मात्र को कहते हैं।"[1]

वस्तु संकलन की दृष्टि से उपन्यास दो प्रकार के होते हैं । (1) सुसम्बद्ध कथानक वाले और (2) असम्बद्ध कथानक वाले उपन्यास । प्रेमचंन्द, जैनेन्द्र, भगवती चरण वर्मा, यशपाल आदि से लेकर अज्ञेय और धर्मवीर भारती तक के सभी लेखक सुसम्बद्ध कथानक (नोवल ओफ ओरगेनिक प्लोट") को ही अपने उपन्यास में लेते रहे हैं । पाश्चात्य देशों में प्रयोग की दृष्टि से कुछ ऐसे उपन्यास भी लिखे गए हैं जिनमें पात्रों के क्रिया कलापों को सुसम्बद्धता से अधिक महत्व दिया गया है । ऐसे उपन्यासों को "नोवल ओफ लूज़ प्लोट" कहा गया है । सुसम्बद्ध कथानक में प्रारंभ से लेकर अन्त तक एक सूत्रता, क्रमबद्धता और परिपूर्णता होती है ।

उपन्यासकार प्रयोजन विशेष उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर ही घटनाओं का आयोजन करता है । घटनाएं जीवन के स्त्रोत

1 - "साहित्य का साथी - डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी-पृ॰10

के साथ उपन्यास का सम्बन्ध कराती है । डॉ॰ नारायण अग्नि-होत्री ने कहा है॰ "घटनाओं का जमघट उपन्यास का नाम नहीं पा सकता । उपन्यास का स्वरूप पाने के लिये चुनाव के संकरे द्वार से होकर गुजरना पडता है ।"[1] अथवा अनेक घटनाओं का समन्वय किया जाता है । कलाकार का कौशल इस बात में हैं कि ये सब घटनाएँ एक-दूसरे के साथ श्रृंखला में बँध कर साथ साथ चले । डॉ॰ रामरतन भटनागर ने घटनाओं के संदर्भ में कहा है, "आईंस्टाइन की खोजों ने आज देश और काल के सम्बन्ध में हमारी धारणा ही बदल दी है ।......... वर्जिनिया वूल्फ ने अपने "द वेब्ज" नामक उपन्यास में काल प्रवाह के तीन स्तर तक एक साथ चलाए हैं और घटनाओं की असंगति और क्रमहीनता से काल-स्त्रोत का आभास दिया है।"[2]

इस प्रकार उपन्यास के अच्छे कथान्क के लिये मौलिकता, सुसंगठितता, संभवता और रोचकता आदि उपादानों की आवश्यकता होती है ।

वर्तमान जीवन में अनेक समस्याएँ हैं । इसलिए मौलिकता के लिए पर्याप्त गुंजाइश हो गई हैं । जैसे अछूतों का विषय नये लेखकों के लिए उपजाऊ क्षेत्र है । वेश्याओं का उद्धार प्रेमचन्द के "सेवासदन" में तथा पूंजीपति और मजदूर मैक्सिम गोर्की के :"मदर" उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है ।

1 - "उपन्यास कला के तत्व"-डॉ॰ नारायण अग्निहोत्री-पृ॰82

2 - "मूल्य और मूल्यांकन - डॉ॰ रामरतन भटनागर - पृ॰ 225

कथानक अपने मूल रूप से और सुगठित होने की अपेक्षा रखता है । कथाएँ अनेक स्थानों और समयों में से आरंभ होकर भी एक दूसरे से जूडी रहती हैं और आपस में मिलकर सुगठित कथानक का निर्माण करती है ।

उपन्यास एक कलाकृति है । उसमें सत्य का सुन्दर रूप से प्रदर्शन किया जाता है । यह कोई ऐसी बात भी नही करता जो सम्भव और अघटनीय न हो । कहा गया है "असंभाव्य न वक्तव्यं प्रत्यक्ष-मपि दृश्य ते" । उपन्यास की काल्पनिक घटनाएँ भी वास्तविक घटनाओं की प्रतिच्छाया होती है । कल्पना कहानी के आकर्षण में वृद्धि कर सकती है परन्तु उसकी अतिशयता कथावस्तु का दोष होती है । वस्तुत: सम्भवता ही कथानक का महत्वपूर्ण गुण है ।

उपन्यास को अँग्रेजी में "नोवल" कहते है । "नोवल का अर्थ है "नवीन", नवल । अत: इसमें रोचकता, नवीनता होना आवश्यक है । इसमें कुछ भी अप्रत्याशित नहीं होना चाहिए ।

उपन्यास के कुछ उपादानों की ओर संक्षेप में इंगित कर चूकने के पश्चात् हम कथावस्तु की दृष्टि से शिवानी की वस्तुयोजना पर विचार करेंगे ।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यासों की कथावस्तु का भी अव-लोकन कर चूकने के पश्चात् अब हम उन कथानकों की कुछ विभिन्न विशेषताओं की ओर दृष्टिपात करेंगे ।

॥अ॥ समस्या प्रधान कथानक :-

किसी भी लेखक की कृति पीछे कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होता है । समाज की कुछ समस्याओं का निरूपण अपनी कृति के अंतर्गत अवश्य होता ही है । शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन से सम्बन्धित कई समस्याएं दृष्टिमान होती है । उनके समस्याओं की प्रधान समस्या अवैध सन्तान की है । नारी की सबसे दु:खदायक समस्या उसकी विवशता और पीडा है, अवैध संतान को जन्म देना । समाज ऐसी संतान को स्वीकार नहीं करता तथा जन्मदात्री और उसके माता-पिता आदि को घृणा से देखता है किंतु उस पुरुष से कुछ नहीं कहता जो उस का कारणभूत है । नारी विवश है और पुरुष उसे भोग की वस्तु मात्र ही समझता है ।

शिवानी ने "किशनुली का ढाँट" में इस समस्या को उभारा है । शिवानी ने इसमें कहा है कि, "समाज उस जननी के साथ ही उसकी सन्तान को भी खदेड देना चाहता है, लेकिन वह उसे अपना आश्रय नहीं देना चाहता । वह उस कुटिल को नहीं ढूंढता उससे कुछ नहीं कहता जिसने उस पगली किशनुली का सर्वनाश किया है । लेकिन उस असहाय निर्दोष मासूम पगली को समाज निकाल देता है । "1

हमारा हिन्दू समाज चाहे उस सन्तान को न स्वीकार करें, लेकिन ईसाइयों के द्वार उसके लिये सदा खुले हैं । "कृष्णकली" उपन्यास की नायिका को पालने वाली बचानेवाली एक क्रिश्चियन

1 - "किशनुली का ढाँट" - शिवानी - पृ. 27

सन्त महिला डॉ० पैट्रिक ही थीं । इसी प्रकार "सुरंगमा" उपन्यास की लक्ष्मी की सन्तान को अवैध होने से बचाने वाली वेरोनिका भी क्रिश्चियन महिला ही थी जिसने अपने भाई रोबर्ट का शादी करवाकर कितना बड़ा बलिदान दिया था । "कैंजा" और "श्मशान चम्पा" की भी यही समस्या थीं । विमाता का भार वहन करके भी नन्दी तिवारी ने बच्चे रोहित को अवैध न होने दिया । "श्मशान चम्पा" की कहानी पर्वतीय प्रदेश के उच्चकुलीन समाज के विघटन की कहानी है । आधुनिक शिक्षा के सुलभ होने के कारण लड़कियाँ उच्च शिक्षण प्राप्त करती है किंतु दकियानूस पर्वतीय समाज अपने ही समाज में कन्यादान निभाने की मूर्खता के पीछे कैसा बेहाल हुआ जा रहा है तथा पहाड़ों से दूर जिन्दगी बिताते हुए पर्वतीयों के लिये समस्या कितनी विकट हो रही है यह शिवानी ने दर्शाया है । आज के समाज में बदलती हुई मान्यताओं में दो पीढ़ियों का संघर्ष उजागर होता है । किंतु नयी पीढ़ी की महिला को कौन-सा मार्ग अपनाना चाहिए, जो मधुकर से मिलकर भी दूर हट जाने वाली चम्पा का या जूही का मार्ग, जो विधर्मी के साथ भागी और फिर क्लबों तथा होटलों में नग्न नृत्य करने लगी ? जूही का अन्त भी बीभत्स और त्रासदी है और चम्पा गृहोद्यान छोड़कर श्मशान चम्पा बन गई । पुरातन संस्कारों के कारण जरा के लिये अपने प्रेमी का दान देने की उदारता स्वाभाविक है ? अतः "श्मशान चम्पा" की चम्पा और कमलेश्वरी, "मायापुरी" की शोभा और "विषकन्या" की कामिनी जैसी नारियाँ संयोग से सभी स्वयं या नियति के कारण पीड़ाएँ भोगती हैं । उनके सन्त्रास की चरमसीमा पर न तो समाज होता है, न धर्म और न कोई आत्मीय ।

शिवानी की संवेदमयी, निष्ठावान, संघर्षशील एवम् कमनीय युवतियाँ उपलब्धि के समय पर प्राप्ति को अस्वीकार कर देती है । जैसे कि प्रसाद के चरित्र अपने लक्ष्य तक पहुँचकर उत्सर्गशील या वैरागी हो जाते हैं; जो "चम्पा", देवसेना, मनु आदि से ज्ञात होता है ।

शिवानी के भी "मायापुरी" की शोभा और "श्मशान चम्पा" की चम्पा ऐसे ही चरित्र हैं । अन्य समस्याओं में वेश्या जीवन की भी समस्या प्रस्तुत है । "चौदह फेरे" की मल्लिका, "श्मशान चम्पा" की रिन्नी खान (जूही) "रथ्या"की वसंती आदि परिस्थितियों के कारण इस जीवन को अपनाती हैं । इनके वेश्या पात्र सभी अभिजातवर्गीय पढ़ीं-लिखी और स्वेच्छा से इस कार्य को अपनाती है । जिस प्रकार प्रेमचन्दजी ने पुरुष-प्रकृति के मूल रहस्य को पाकर नारी का चित्रण किया है उसी प्रकार शिवानी ने नारी-प्रकृति के रहस्य को उद्घाटित कर संसर्गविश पुरुष चरित्रों का चित्रण चित्रित किया है ।

(ब) कल्पना एवम् सूक्ष्म चित्रण :-

शिवानी के साहित्य में कल्पना का विशिष्ट प्राचुर्य है और उनमें सूक्ष्म चित्रण करने की विशेष सूझ है । उनकी भाषा-शैली के कारण उनकी कल्पना की सूक्ष्मता सजीव चित्रों की भाँति हमारी आँखों के सामने छटती प्रतीत होती है । कुष्ठ रोग की समस्या को अगर यूँ ही रूप दिया

होता तो उसे पढ़ने कोई लालायित न होता उसी प्रकार "रतिविलाप" भी श्रेष्ठ उदाहरण है ।

(क) सत्याधारित कथानक :-

शिवानी के उपन्यासों के कथानक में कल्पना के साथ साथ वास्तविकता का भी चित्रण है । लेखक की अनुभूतियाँ या स्मृतियाँ ही अपनी रचनाओं के अंतर्गत दृष्टिगत अवश्य होती है । इस बात की स्वीकृति देते हुए शिवानीजी कहती है - "आज से कोई सत्रह वर्ष पूर्व मैं अल्मोड़ा में थी और हमारे बंगले से कुछ दूर था कुष्ठाश्रम । उसी कुष्ठाश्रम और कुष्ठ से पीड़ित रोगियों का उनकी सेवा-सुश्रुषा में तल्लीन उन मिशनरी महिला विदेशी सन्त डॉ॰ पैट्रिक का चरित्र अभी कुछ सत्याधारित है।"[1]

"कृष्णकली" में कुष्ठ रोग का सजीव वर्णन पढ़कर अनेक पत्र लेखिका के पास आये थे, जिनमें पूछा था कि इस रोग का ऐसा विषद अनुभव आपको कैसे प्राप्त हुआ है ? क्या आप स्वयं इस रोग से पीड़ित है या आपके परिवार में किसी को यह रोग है ?

"रतिविलाप" का कथानक भी इसी प्रकार वास्तविकता पर ही आधारित है तथा "कृष्णकली" भी इसी प्रकार का प्रतीत होता है क्योंकि इनमें स्वयं उनकी सहेलियों के साथ घटनाएँ घटित होती है जो शांतिनिकेतन में उनके साथ पढ़ती थीं । इस प्रकार "किन्नुली की टॉट" तथा "विषकन्या"

1- "मेरी प्रिय कहानियाँ" - शिवानी - पृ॰ 6, 7 भूमिका

के कुछ अंश भी सत्याधारित है । निष्कर्षत: शिवानी ने अपने भोगे यथार्थ के साथ घटी घटनाओं और अपने सम्पर्क में आये पात्रों के तानों बानों से अपनी रचनाओं को अधिक सुन्दर व सजीव बनाई है ।

(ङ) कुछ विशेष कथानक :-

जिस प्रकार यह सत्य हैं कि जिन परिवेशों में जीवन-यापन होता है उसका उल्लेख लेखक से हो ही जाता है । शिवानी ने भी अधिकांश उपन्यासों में पहाडी-जीवन से सम्बन्धित घटनाएं प्रस्तुत की है । शिवानी ने अपने जीवन में काफी भ्रमण भी किया है अत: इसकी छाया भी उनके कथानकों में वर्णन में भाषा शैली में आदि में दृष्टव्य है ।

"चौदह फेरे", "किशनुली", "मायापुरी", सुरंगमा", "रथ्या", "भैरवी", तथा "श्मशान चम्पा" आदि में पहाडी जीवन विशेषकर उभरा हुआ है । उनके कुछ कथानकों की विशेषता यह भी है कि उत्सुकता को बढाते रहना ।

पाठक के मन में यही जिज्ञासा रहती है कि आगे क्या हुआ होगा ? ...... इस बात की संभवता होने की आवश्यकता के बारे में बाबू गुलाबराय ने कहा है - "कथा सुनने वाला सुनते समय एक स्वाभाविक कौतूहल वश आगे क्या हुआ, जानने के लिये उत्सुक रहता है, किन्तु

उत्तर में कुछ नवीनता न हो उसका जी ऊब जाता है और कौतुहल की हत्या हो जाती है।"[1]

शिवानी भी इस बात का समर्थन करते हुए कहती है, "शान्ति-निकेतन की आठ सुदीर्घ वर्षों की स्मृति, रामपुर ओरछा का रियायती वैभव, सौराष्ट्र की रसधार और दक्षिण का सरल अभिनव सौन्दर्य इनके साथ कुमाऊ से बार-बार मिलने का आनन्द .... इन अनमोल मोतियों के छलकते कलश से कितने ही अछूते कथानक निकाल सकती हूँ ।........ क्या पता कथानक निकलते रहें, कथानक भी सजग रहें किन्तु हुंकारा देने वाला सो जाएँ । इसी से मानती हूँ कि मेरी कहानियों के हुंकारा लगाने वाले सदैव पूछते रहें - आगे फिर क्या हुआ ? अन्त तक पाठकों की उत्सुकता को अपनी मुट्ठी में बन्द कर सकूँ ।"[2]

<u>शिवानी की वस्तुयोजना के गुण दोष :-</u>

﴾1﴿ पुनरावृत्ति :- शिवानी के कथावस्तु की सामग्री वास्तविक जीवन व पारिवारिक सामाजिक समस्याओं पर अवलम्बित है किंतु पुन: पुन: इसी बात का विषय बनाने से पुनरावृत्ति दोष दृष्टिपात होता है । "कैंजा", "किशनुली", "कृष्णकली", "सुरंगमा" आदि उपन्यासों में यह दोष देखने मिलता है ।

﴾2﴿ घटना वैचित्र्य :- उपन्यास की रोचकता बढाने के लिए घटना वैचित्र्य आवश्यक है । प्रेमचन्द ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा

1 - "काव्य के रूप" - बाबू गुलाबराय - पृ० 156
2 - "मेरी प्रिय कहानियाँ" - शिवानी - पृ० 17

है कि "उपन्यासकार अपनी कथा को घटना-वैचित्र्य से रोचक बनाये लेकिन शर्त यह है कि प्रत्येक घटना असली ढांचे से निकट सम्बन्ध रखती हो । इतना ही नहीं बल्कि उसमें इस तरह घुलमिल गई हो कि वह कथा का आवश्यक अंग बन जाए .... उपन्यास में वही घटनाएं वही विचार आने चाहिए जिनसे कथा का माधुर्य बढ़ जाए, जो "प्लोट" के विकास में सहायक हों अथवा पात्रों के गुप्त मनोभावों का चित्रण करती हों ।"[1]

इस दृष्टि से शिवानी के उपन्यास में शिवानी को सफलता नहीं मिल पायी है । उन्होंने घटना-वैचित्र्य द्वारा कथानक को रोचक अवश्य बनाया किंतु संयोग और आकस्मिकता के प्रयोग से उसकी कलात्मकता अदृश्य हो गई है । उनके उपन्यासों में "प्लोट" (कथावस्तु) के विकास में सहायक घटनाओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी घटनाएं आ गई हैं जो निष्प्रयोजन हैं । अर्थात् कथानक दोष पूर्ण नहीं है किंतु कलात्मक त्रुटि दृश्यमान है । उन्होंने कथावस्तु के निर्माण में संयोग और आकस्मिकता का बराबर प्रयोग किया है । किंतु वे इतने अधिक संयोग रचती हैं कि उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध हो जाती है तथा संयोग के तर्क-संगतता जादुई करिश्में से लगते हैं । जैसे कि -"श्मशान चम्पा" में जूही का रीना खान के रूप में चम्पा से मिलना, चम्पा का ट्रेन के कूपे में मधुकर से मिलना, सेनगुप्त तथा मयूरी का सहसा दुर्घटनाग्रस्त होना, चम्पा का सम्पत्ति की स्वामी

1- "कुछ विचार" भाग - 1 - प्रेमचन्द - पृ॰ 51

होना और सर्वस्व दान देने का निर्णय करनाऔर केवल चम्पा को "मृच्छ कटिक" का उदाहरण सुनाकर "श्मशान चम्पा" का विशेषण देने के लिये रामदत्त का प्रकट होना । इसी तरह "कृष्ण कली" में पन्ना का अपने पूर्व प्रेमी विद्युत रंजन से कई वर्षों बाद आकस्मिक मिलन, प्रवीर का भगोड़ी युवती से लखनऊ के मेले में अचानक कली के रूप में परिचय, नानी मौसी से ट्रेन में अचानक मुलाकात तथा "मायापुरी" में शोभा के तीनों भाईयों की एक साथ हैजे से आकस्मिक मृत्यु, दुर्घटना आदि करिश्मे से प्रतीत होते हैं ।

§3§ वर्णन बाहुल्य :- शिवानी के कथानकों में वास्तविकता एवम् कल्पना दोनों का संमिश्रण देखने मिलता है । कथा विकास के निर्माण हेतु जिन परिस्थितियों का वर्णन करती हैं वह क्वचित अतिशयोक्ति पूर्ण और नाटकीय भी लगता है । यथा "श्मशान चम्पा" उत्तरार्ध घटनाक्रम नाटकीय सा ही लगता है । अधिकांशत: पात्र के रूप और वातावरण के चित्रण से ही कथावस्तु का विस्तार देखने मिलता है । हालांकि कुछ वर्णन प्रभावोत्पादक, उत्सुकता बढ़ाने वाले और घटनाओं तथा पात्रों पर प्रभाव डालने वाले हैं । अपितु कुछ अति सूक्ष्म वर्णनों के कारण कथावस्तु में शैथिल्य भी उत्तर आया है । अनावश्यक विस्तार के कारण कई उपन्यासों के कथानक बोझिल भी महसूस होते हैं । जैसे "कृष्णकली" और "सुरंगमा" के अंतर्गत वेश्या-जीवन की परिचर्या । "श्मशान चम्पा", अतिथि "कस्तूरी मृग" तथा अन्य उपन्यास में संगीत एवम्

गायकी की चर्चा, "रतिविलाप" में साड़ियों के नामों की तथा अन्य उपन्यासों में गहनों के नामों की सूचि व वर्णन विस्तार शिथिलता प्रदान करते हैं ।

{4} एक रसता :- इन अवलोकन से स्पष्ट है कि शिवानी के उपन्यासों की वस्तु योजना में मौलिकता, सुसंगठितता एवम् रोचकता तो है ही अपितु साथ साथ पुनरावृत्ति प्रगल्भता, एक रसता आदि भी है । उनके कथानक प्रायः एक ही ढाँचे के हैं किंतु वस्तु संगठन की दृष्टि से विविधता अवश्य है । इन सब के बावजूद भी पाठक को आकर्षित करने की क्षमता है यही उनकी वस्तु योजना की सबसे बड़ी विशेषता एवम् उपलब्धि है ।

शिवानी के उपन्यासों में देश, काल व वातावरण :-

उपन्यास की कथा को सत्य रूप देने के लिये तथा सजीव व स्वाभाविकता लाने के लिये वातावरण अति आवश्यक है । देश काल वास्तविकता लाने के लिये स्थानीय ज्ञान की बहुत जरूरी है । उपन्यास के पात्र, विविध प्रतिक्रियाएँ तथा घटनाएँ पाठक तभी समझ सकता है कि जब देश काल और वातावरण का सही प्रयोग किया गया हो । बाबू श्याम सुन्दर दासजी ने लिखा है " उपन्यास के देश और काल से हमारा तात्पर्य उसमें वर्णित आचार-विचार रहन-सहन और परिस्थिति आदि से हैं ।" [1] और बाबू गुलाबराय ने तो ये भी कहा है कि "देशकाल का वर्णन कथानक को स्पष्टता देने के लिये होना चाहिए न कि उसकी गति में बाधा डालने के लिए ।" [2]

1 - "साहित्यालोचन" - बाबू श्याम सुन्दरदास - पृ० 17
2 - "काव्य के रूप" - बाबू गुलाबराय - पृ० 176

शिवानी के उपन्यासों में देश काल के अन्तर्गत उन सब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों का चित्रण अभीष्ट है । "श्मशान चम्पा" नामक उपन्यास में शिवानी ने देश की वर्तमान स्थिति, राजनीति और उसके प्रभाव को बड़ी मार्मिकता से रेखांकित किया है । भ्रष्टाचार के आरोप में चम्पा के पिता की नौकरी से "सस्पेंड" करना तथा निष्का-श्रित होना । यथा "लगता है भ्रष्टाचार किसी महामारी की भांति पूरे प्रदेश को अपने मुँह में ले चुका था ।"[1]

"अतिथि" उपन्यास के अंतर्गत भी राजनैतिक भ्रष्टाचार का यथार्थ वर्णन स्पष्ट होता है ।

"श्मशान चम्पा" में कुमाऊँ अंचल की सामाजिक परम्पराओं और विवाह - प्रथा का अत्यंत सफल चित्र प्रस्तुत है । जूही का अन्तर्जातीय विवाह का भी वर्णन देखने मिलता है । जो विवाह परम्परा का बदलता रूप स्पष्ट करता है । "कृष्णकली" में भी धार्मिक मान्यताओं, भ्रष्ट राजनीति और सामाजिक सम्बन्धों के परिवर्तित रूप का चित्रण चित्रित है । भारत में "हिप्पी" संस्कृति का जो रूप प्रवेश कर गया वह भी लेखिका से अछूता नहीं रहा है । युवा पीढी का अपने परिवार एवं माँ-बाप की अवज्ञा, विद्रोह, आक्रोश आदि इस युग की स्थिति का वर्णन है । साथ- साथ पहाड़ी ताई के चरित्र का मार्मिक चित्रण के द्वारा ग्राम्य-संवेदना का भी सफल अंकन है । शिवानी के कई उपन्यासों में पहाड़ के रीति-रिवाजों का भी

1 - "श्मशान चम्पा" - शिवानी - पृ० 8

यत्र-तत्र उल्लेख किया है । जैसे - "पहाड़ी स्कूलों के बच्चे यदि बिना टोपी के जाएँ तो उन्हें कठोर दण्ड मिलता था ।"[1] तथा "उसके गाँव में पारिजात का एक पेड़ उसी के घर से सटकर लगा है । भोर होते ही गाँव की औरतें आँचलों में भर-भर कर "लाख" चढ़ाने ले जाती हैं । कहते हैं कि एक लाख पारिजात पुष्प चढ़ाने से विष्णु प्रसन्न हो जाते हैं और निःसन्तान को सन्तान एवं कुमारियों को कार्तिकेय - सा सुन्दर वर देते हैं।"[2] "मायापुरी" के अनेक प्रसंगों में आँचलिक उपन्यास की विशेषताओं का समावेश हुआ है । ग्राम्य-वातावरण के तथा रीति-रिवाजों के चित्रण में वातावरण तथा भगवान के प्रति उनकी उत्कट श्रद्धा व्यक्त होती है । इस प्रकार पात्रों की सामाजिक तथा मनोगत स्थिति का सजीव चित्रण के लिये शिवानी सफल वातावरण का सर्जन करने में समर्थ है ।

प्रकृति चित्रण के द्वारा वातावरण को सजीव बनाने में भी शिवानी सिद्धहस्त है । यथा-" झरझर पांगर के कठोर दाने ढालू छत से लुढ़कते-पुढ़कते धरा पर कत्थई चादर सी बिछा गए और गुलाबी पुष्पों का वृक्ष पलभर में ढूंठ झाड पुष्पों से गदराए यौवन को खोकर नीरस विलसित पुस्तः बन गया ।"[3]

1 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ० 1
2 - "वही" - शिवानी - पृ० 22
3 - "भैरवी" - शिवानी - पृ० 92

अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं ।

"श्रावण का महीना था, शस्यश्यामला बंगभूमि अपने पूर्ण यौवन पर थी । मिलों से उठते काले धुएँ की लकीर भी श्रावण की हरीतिमा को काला नहीं कर सकी थी । माली ने मेंहदी की झाड़ियों पर अभी-अभी पानी डाला था, भीगी मिट्टी की सोंधी गमक से मिली मेंहदी की सुगन्ध ने नशे के जाल की तरह फैलकर कोठी को घेर लिया था ।"[1]

"मूसलाधार वृष्टि टीन की ढालू छतों पर नगाड़े-सी बजा रही थी, देवदार, बाज बुरांश के लम्बे वृक्षों की घनी कतार में छिपे बंगले में बरामदे में टंगी बरसाती हड़बड़ाकर सर पर डाल डॉ॰ पैट्रिक तीर-सी निकल गई । ओफ कैसी विकट वृष्टि थी उस दिन लगता था कि क्रुद्ध आषाढ़ के भृकुटि-विलास में अल्मोड़ा की सृष्टि ही लय हो जाएगी । कड़कती बिजली सामने गर्वोन्नित खड़े गागर और मुक्तेश्वर की चोटियों पर चमकी .... बिजली के धड़ाके के साथ नवजात शिशु का क्रन्दन ।"[2]

शिवानी के उपन्यासों में कहीं कहीं पर प्रकृति चित्रण मृत्यु के भावी संकेत के रूप में भी चित्रित हुआ है । जैसे कि "सुरंगमा" के अंतर्गत बिजली के गिरने से दर्पण के टूटने से मृत्यु का निश्चित संकेत होना ।"[3]

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ॰ 36
2 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ॰ 3
3 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ॰ 110

इसके अतिरिक्त ग्राम्य वातावरण जैसे कि -"छतों पर कपड़े सूखना, गाय-भैंसों की घंटियों का स्वर, चूड़ीवाले के आने पर सबका घेरकर खड़े हो जाना आदि।"[1] कहीं कहीं पर भाषा और वेशभूषा से ही वातावरण सर्जन किया है जिस पर से ही देश-काल अवगत होता है । "सुरंगमा" में गजानंद पहाड़ी और लक्ष्मी बंगाली भाषा तथा रोबर्ट क्रिश्चियन होने के कारण अंग्रेजी बोलते हैं । इसी प्रकार "रतिविलाप", "विषकुली", "भैरवी", "विषकन्या", "मायापुरी" आदि में पात्र उनके देश काल की भाषा का प्रयोग करते हैं । "भैरवी" के अंतर्गत रहन सहन और घर सजावट से भी वातावरण का चित्रण है । जैसे "मुर्दे की खोपड़ी की एन्ट्री, दीवारों पर टांगे गए थे टूटी फूटी खंडित मूर्तियों के छिन्न भिन्न अंग .... दीवारों पर दस फूटी नंगी चुड़ैलों की तस्वीरें बनी थीं, जिनके अंग - प्रत्यंगों से निकली निरर्थक लता - गुल्मों की "फ्रेस्को" कला पूरी छत को घेरे थी ।"[2]

शिवानी ने अपने जीवन में बहुत - कुछ देखा है । एक ओर वे राजा - महाराजाओं के महलों में रही हैं, दूसरी ओर बड़े पदाधिकारियों, सरकारी अफसरों, राजनीतिक नेताओं और बुद्धि - जीवियों के अभिजात जीवन से भी परिचित है । इसके अतिरिक्त ग्रामीण अंचल के परिवेश, रहन-सहन, रीति-रिवाजों को भी जानती हैं तथा काश्मीर से कन्या कुमारी और गुजरात से बंगाल तक परिभ्रमण करती रही है । अत: परिवेश-चित्रण में उन्हें पूर्णतया सफलता मिली है ।

1 - "मायापुरी" - शिवानी - पृ० 120
2 - "भैरवी" - शिवानी - पृ० 128

शिवानी के उपन्यासों में चरित्र चित्रण कला :-

हमें यह ज्ञात करना होगा कि चरित्र चित्रण कला क्या है ? बाबू गुलाबराय के शब्दों में - "यदि उपन्यास का विषय मनुष्य है तो चरित्र चित्रण उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है क्योंकि मनुष्य का अस्तित्व उसके चरित्र में है। चरित्र के ही कारण हम एक मनुष्य को दूसरे से पृथक करते हैं और मनुष्य के आपे (पर्सोनालिटी) को प्रकाश में लाते हैं । चरित्र में मनुष्य का बाहरी आपा और भीतरी आपा दोनों ही आ जाते हैं ।"[1]

प्रेमचंद के मतानुसार , " उपन्यास मानव चरित्र का चित्रण मात्र है और मानव चरित्र के भिन्नत्व में अभिन्नत्व दिखाना उपन्यासकार का कर्तव्य हैं ।"[2] पात्र और चरित्र - चित्रण के अनेक प्रकार होते हैं । जैसे व्यक्ति और टाइप पात्र । प्रत्येक उपन्यास के पात्र प्राय: विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि (टाइप) के रूप में होते हैं । व्यक्तित्व प्रधान पात्र जो नीजी विशेषता (इण्डिविजुआलिटी) रखते हैं । पात्रों का दूसरा वर्गीकरण स्थिर और गतिशील (स्टैटिक एण्ड डाइनामिक) या परिवर्तनशील का है । स्थिर पात्रों के चरित्र में बहुत कम परिवर्तन होता है तथा गतिशील पात्रों के चरित्र में उत्थान पतन दोनों ही आते रहते है ।

1 - "काव्य के रूप"- बाबू गुलाबराय - पृ॰ 169
2 - "कुछ विचार" - उपन्यास संबंधी लेख - प्रेमचन्द

बाबू श्याम सुन्दर दास ने चरित्रांकन के विषय में कहा है कि "चरित्र का क्रमशः प्रस्फुटन होना चाहिए आकस्मिक उद्घाटन नहीं । इसी प्रकार नैतिकता - अनैतिकता पात्र के अच्छे या बुरे होने का प्रमाण नहीं है । सजीवता ही पात्र लेखन की प्रमुख विशेषता है।" बाबू गुलाबरायजी ने भी "काव्य के रूप" के अंतर्गत पृ०- 169 पर यही बात का समर्थन किया है ।

उपन्यासकार अपने पात्रों का चित्रण दो प्रकार से करता है । (1) प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण (डायरेक्ट डेलिनियेशन) और (2) परोक्ष चरित्र चित्रण (इनडायरेक्ट डेलिनियेशन) । प्रत्यक्ष चित्रण विधि चार एवम् परोक्ष चित्रण विधि तीन प्रकारों के द्वारा सम्पन्न होती है । यथा -

प्रत्यक्ष चरित्र विधि :-

(1) प्रकाशन विधि (एक्सपोजीशन)
(2) वर्णनात्मक विधि (डेस्क्रिप्शन)
(3) मनोविश्लेषण विधि (साइको एनालिसिस)
(4) अन्य पात्रों द्वारा (थ्रू अदर कैरेक्टर्स)

परोक्ष चरित्र विधि :-

(1) अभिभाषण द्वारा (थ्रू स्पीच)
(2) क्रियाकलाप द्वारा (बाय एक्शन)
(3) पात्रों पर प्रभाव द्वारा (बाय इफैक्ट)

अच्छे उपन्यासकार दोनों ही विधियों का अपनी - अपनी रुचि के अनुसार प्रयोग करके चरित्रांकन को प्रभावित कर सकते हैं । जहाँ उपन्यासकार स्वयं पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालता है उस विधि को विश्लेषणात्मक ‡एनैलिटीकल‡ विधि कहते हैं और जहाँ पात्र अपने वार्तालाप या क्रियाकलाप द्वारा अपने चरित्र पर या अन्य पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालता है इस विधि को नाटयात्मक या अभिनयात्मक ‡ड्रामाटिक‡ या परोक्ष चरित्रांकन विधि कहा जाता है ।

निष्कर्षतः अच्छा चरित्र चित्रण वही कहा जाएगा जो पात्र के बाहय और आंतरिक रूप को स्पष्ट करे । जो पात्र के क्रियाकलाप और वार्तालाप के द्वारा उसके हृदय और मस्तिष्क को उजागर करे इतना ही नहीं पर जो घटनाओं, परिस्थितियों तथा सामाजिक सन्दर्भों के बीच पात्र की योग्यता ‡आनेस्टिटी‡ की सहजता, स्वाभाविकता, गतिशीलता तथा कलात्मकता के साथ अंकित कर सके ।

चरित्र चित्रण के महत्व की चर्चा के बाद अब हम शिवानी के पात्र के वैशिष्टय की ओर अवलोकन करेंगे ।

शिवानी के सभी पात्र गतिशील ‡डाइनामिक‡ हैं । इसलिए उन्हें किसी एक वर्ग विशेष में बांधा नहीं जा सकता । इनके पात्र इलाचन्द जोशी या अज्ञेय की तरह व्यक्तिवादी भी नहीं है या प्रेमचंद की तरह संचायित भी नहीं है । किंतु गतिशीलता है । जैसे -

शिवानी के पात्र परिस्थितियों के कारण कभी अभिजातीयता धारण करते हैं तो दूसरी ओर मध्यम या निम्नस्तरीयता। अर्थात् वे स्थिर नहीं रह पाते हैं। "कृष्णकली" उपन्यास में कृष्णकली निम्नस्तरीय कोढी परिवार में जन्म लेती है याने कोढी मां-बाप की "जारज" संतान है किंतु नियति तथा परिस्थितियों के कारण पालन-पोषण एक अभिजातीय वेश्या के यहां उच्च संस्कारों के साथ होता है। इस प्रकार वह एक वर्ग में स्थिर न रहकर गतिशील है। इसी प्रकार "रथ्या" की नायिका वसंती भी परिस्थितीवश जीवन जीती है। "कैंजा" के अंतर्गत नायक सुरेश प्रारंभ में मध्यम-वर्गीय प्रेमी लेकिन प्रेयसी न मिलने पर निम्न स्तरीय और अंत में परिस्थितिवश पुन: आदर्श पुरुष बन जाता है। "अतिथि" के अंतर्गत कार्तिक का भी इसी प्रकार का पात्र है। "रतिविलाप" में भी करसनदास कापड़िया तथा "विश्नुली" के पंडित परमानंद (शास्त्रीजी) नारी की वासना में अपने स्थान से विचलित होते हैं। शिवानी के उपन्यासों की पात्र सृष्टि व्यापक होने के कारण तथा अध्ययन की दृष्टि से सुविधा के कारण इन पात्रों को हम दो विभागों में विभाजित कर सकते हैं।

1. (अ) प्रधान पुरुष पात्र :

सतीश (मायापुरी), कर्नल (चौदहफेरे), प्रवीर (कृष्ण-कली), विक्रम (भैरवी)· मधुकर (श्मशान चम्पा), दिनकर (सुरंगमा), सुरेश (कैंजा), विमलानन्द "रथ्या",

करशनदास कापडिया ॥रतिविलाप॥, पण्डित परमानन्द ॥किश्नुली॥, रोहित ॥विषकन्या॥, माधव बाबू ॥अतिथि॥ शिवसागर ॥पूतोंवाल ॥

॥ब॥ प्रधान नारी पात्र :-

कृष्णकली ॥कृष्णकली॥, शोभा ॥मायापुरी॥, अहल्या ॥चौदहफेरे॥, चन्दन ॥भैरवी॥, चम्पा ॥श्मशान चम्पा॥, सुरंगमा ॥ सुरंगमा॥, नन्दी तिवारी ॥कैंजा॥, वसन्ती ॥रथ्या॥, अन्सूया ॥रतिविलाप॥, किश्नुली ॥किश्नुली का ढाँट॥, नलिनी ॥माणिक॥, सुपर्णा ॥गैंडा॥, कामिनी ॥विषकन्या॥, जया ॥अतिथि॥, पार्वती ॥पूतों वाली॥

2॰ ॥अ॥ गौण पुरुष पात्र :-

गजानंद, रोबर्ट म्युरी ॥सुरंगमा॥, सेनगुप्त॥श्मशान चम्पा॥, सर्वेश्वर, राजेश्वर ॥चौदहफेरे॥, अविनाश॥मायापुरी॥ अघोरी अवधूत ॥भैरवी॥, विद्युतरंजन, असदुल्ला, बाबी ॥कृष्णकली॥ वेद और रोहित ॥गैंडा॥, कार्तिक ॥अतिथि॥ बदरीनाथ दूबे ॥पूतोंवाली॥

॥ब॥ गौण नारी पात्र :-

डा॰ पैट्रीक, कुन्नी, पन्ना, विवियन, तानो मौसी मुनरी ॥कृष्णकली॥ राजेश्वरी, मायादीदी, सोनिया ॥भैरवी॥ जूही, जया रुक्की, कमलेश्वरी ॥श्मशान चम्पा॥ बिनीता, लक्ष्मी, वैरोनिका, मीरा॥सुरंगमा॥ मल्लिका, ताई, बसन्ती ॥चौदहफेरे॥, पगली ॥कैंजा॥, रुक्की ॥रथ्या॥ हीरा, लेखिका ॥रतिविलाप॥, पण्डिताइन ॥किश्नुली॥ रम्भा, दीना ॥माणिक॥ राज ॥गैंडा॥ दामिनी, लेखिका

(विषकन्या), मंजरी, सविता (मायापुरी), ताई, मालती, चन्द्रा लीना (अतिथि)

उक्त पात्रों को भी हम निम्नलिखित तीन उप विभागों में विभाजित कर सकते हैं ।

(अ) अभिजात वर्गीय पात्र

(ब) मध्यम वर्गीय पात्र

(क) निम्न वर्गीय पात्र

1. पुरुष पात्र :

(अ) अभिजात वर्गीय पात्र :

कर्नल (चौदह फेरे), विक्रम (भैरवी), दिनकर (सुरंगमा) रोहित (विषकन्या), सतीश (मायापुरी), विद्युतरंजन (कृष्णकली), सेनगुप्त (श्मशान चम्पा), माधवबाबू (अतिथि)

(ब) मध्यमवर्गीय पात्र :

प्रवीर बोबी (कृष्णकली), मधुकर (श्मशान चम्पा) सुरेश (बेंजा), अविनाश (मायापुरी), रोबर्ट म्यूरी (सुरंगमा) सर्वेश्वर, राजू (चौदह फेरे), विमलानन्द (रथ्या)

(क) निम्नवर्गीय पात्र:

गजानंद (सुरंगमा), सेनगुप्त (श्मशान चम्पा), असदुल्ला खान (कृष्णकली), कसनदास (रतिविलाप) अघोरी अवधूत (भैरवी), रोहित (गैंडा), पं. परमानन्द (चौदह फेरे)

2. नारी पात्र :

(अ) अभिजात वर्गीय पात्र :

अहल्या (चौदहफेरे), मीरा, (लक्ष्मी, (सुरंगमा), सोनिया, चन्द्रिका (भैरवी), बिनीता, मिनी (सुरंगमा), कमलेश्वरी, मयुरी (श्मशान चम्पा), रंभा, नलिनी (माणिक), सुपर्णा (गेंडा), कामिनी, दामिनि (विषकन्या), अनसूया (रतिविलाप), कुन्नी, पन्ना (कृष्णकली), बसंति (रथ्या), पार्वती (पूतोंवाली), जया (अतिथि)

(ब) मध्यम वर्गीय पात्र :

डो. पैट्रिक, निवियन, कृष्णकली (कृष्णकली), शोभा, मंजरी (मायापुरी), बसन्ती ताई (चौदहफेरे), सुरंगमा वैरोनिका (सुरंगमा), राजेश्वरी, चंदन (भैरवी), चम्पा, जया, रुक्की (श्मशान चम्पा), नन्दी (कैंजा) किशना, पण्डिताईन (किशनुली) ताई, मालती, चन्द्रा (अतिथि)

(क) निम्न वर्गीय पात्र :

हीरा (रथ्या), पार्वती (कृष्णकली) चंदन, मायादीदी (भैरवी) सविता (मायापुरी), दीज़ा (माणिक) जूही (श्मशान चम्पा) राज (गेंडा) मल्लिका सरकार (चौदह-फेरे) लीना (अतिथि)

शिवानी के पात्रों और चरित्रों की विशेषता यह है कि प्राय: उनके सभी प्रमुख पात्र "टिपीकल" होते हैं । ये किसी वर्ग या जाति का प्रतिनिधित्व अवश्य करते हैं । साथ ही ये पात्र वर्गगत होते हुए भी वैयक्तिक स्पन्दनों और भावनाओं से युक्त है ।

"मायापुरी" उपन्यास के अंतर्गत पात्रों का चित्रण करते समय परिस्थिति को लक्ष्य में रखा है । शोभा सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी हीन-भाव से पीडित है । अन्य परिवेश में रहकर अन्य की दया पर भी अपनी महत्ता नहीं प्रदर्शित करती है । सविता उपनायिका है और उसमें मद्यपान, धम्रपान और पर पुरुष संगत आदिए दुर्गुण हैं जो वर्तमान उच्च वर्ग की सभ्यता के चिन्ह समझे जाते हैं ।

"श्मशान चम्पा" में दो बहिनों के एकदम विरोधी चरित्र हैं । जूही प्रेमी के साथ चली जाती है बाद में रिन्नीखान नाम से कैबरे डान्सर बन जाती है । चम्पा का चरित्र उज्ज्वल है लेकिन फिर भी वह सुखी नहीं । पिता की मृत्यु, बहन का कलंक और माता की बिमारी को लेकर वह जीती है । वह आत्मरुद्ध, संवेदनशील और कर्तव्य परायण नारी है ।

"कैंजा" में विमाता का भार वहन करती मूक प्रेमिका नन्दी का चरित्र नये रूप में है जो आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी चरित्र है ।

"रथ्या" में एक यथार्थवादी नारी बसन्ती का चरित्र है जो अपने प्रेमी को न प्राप्त करने पर स्वयं का सर्वनाश करती है और ग्रामीण युवती से कैबरे नर्तकी बन जाती है ।

"चौदह फेरे" की नायिका अहल्या है । उसका चरित्र आधुनिक पढ़ी-लिखी तरुण बालाओं की अधूरी मानसिकता का चरित्र है । पढ लिखकर आत्म निर्भर बनने के बावजूद भी पूर्ण निश्चित निर्णय न ले पाने की विवशता उसके चरित्र को अपूर्णता प्रदान करती है । वह सोच सकती है कि "देख लेगी वह पापा की ज्यादतियों को । क्या वह भेड़ बकरी है कि जिधर चाहा हांक दिया ?" [1] फिर भी वह स्वयं निर्णय कर पिता के विरोध में कुछ नहीं बोल पाती और पहाडी ताई का आश्रय लेकर निश्चित दिशा की ओर भाग निकलती है ।

"सुरंगमा" की लक्ष्मी का पति गजानन सनकी, शराबी दुष्ट और दुराचारी है लेकिन लक्ष्मी उदार, सुशील और सती साध्वी है तथा उसका साथ सुख दुःख हर अवस्था में देती है ।

"किशनुली" में एक पगली उन्मादावस्था में अपना सर्वनाश करवाती है और प्यार पाने के बाद शांत हो जाती है । इसमें काखी का चरित्र अविस्मरणीय है । सन्तानहीन, मातृवात्सल्य, उदार और पतिव्रता का चरित्र है । समाज से बैर मोल कर भी वह किशनुली को अपने घर रखती है ।

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ० 200

वह कहती है - "क्या अपनी इस अवस्था के लिए अकेली किसना ही अपराधिनी है ? किश्नुलीकहीं नहीं जाएगी, मैं पालूँगी उसकी सन्तान को ..... चाहे तुम्हारा समाज हमारा हुक्का पानी बंद कर दे ।"[1]

"कृष्णकली" की पन्ना अपनी पीली कोठी में नाच गाकर अपने सतीत्व की रक्षा करती है । "माणिक" में नारी का एक अन्य चरित्र है । उसकी प्रतिभा, शिक्षा, कला मर्मज्ञता आदि को देखकर कोई भी उसे पेशेवर हत्यारिन नहीं कह सकते । नलिनी के चरित्र के द्वारा संयम के नाम दबायी जाती यौवन कुण्ठा से बचना असंभव है तथा एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि इस यौवन भावना के उमडने पर पुरूष की आवश्यकता है ।

"कैंजा" का सुरेश भट्ट, "किश्नुली" का पण्डित जी तथा "रतिविलाप" का करशन दास ऐसे पात्र हैं जो यथार्थ है एवम् भाग्य और विधाता के हाथों में खिलौने मात्र हैं । जीवन में संघर्ष का अन्त होते ही उनके व्यक्तित्व का अन्त भी हो जाता है ।

शिवानी को अपने पात्रों की यथार्थ मनोदशा एवं भावनाओं का चित्रण करने में अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई है । "कृष्ण कली" तथा "रथ्या" में कली और बसन्ती का चरित्र यथार्थ और सजीव है तथा आदर्श रूप में दृष्टिमान होते हैं । "कैंजा" में सुरेश एक

1 - "किश्नुली" - शिवानी - पृ. 27

जघन्य अपराधी है । सेक्स, रेप, मर्डर आदि उस लावारिस से कुछ भी अछूता नहीं था । आरंभ में सच्चा प्रेमी है पर प्रेयसी न मिलने पर मानसिक असंतुलनता प्राप्त करता है । वह नन्दी से कहता है - नन्दी तुमने अपनी अन्तरात्मा से पूछा है कि मेरे एक एक पाप के पीछे स्वयं तुम खड़ी नहीं हो । तुम्हारे पिता ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार किया होता तो शायद मेरी यह दशा न होती ।"[1] जब यह अपना अपराध स्वीकार करता है तब उसका चरित्र पाठकों की दृष्टि में ऊँचा उठ जाता है और पाठकों की सहानुभूति प्राप्त होती है । लेकिन "किशनुली का ढाँट" के पण्डितजी के प्रायश्चित पर दया नहीं उपजती किंतु जीर्ण सामाजिक व्यवस्था, जर्जर रीति रिवाज के विरुद्ध आक्रोश और घृणा पैदा होती है ।

"सुरंगमा" का धीर प्रशान्त नायक रोबर्ट म्यूरी एक महान पात्र है । वह आदर्श प्रेमी है । लक्ष्मी को आत्म हत्या से बचाकर बहन के कहने पर लक्ष्मी की संतान को अवैध कहने से बचाने के लिये उससे विवाह करता है, बदले में न वासना है न किसी चीज की आशा । अंत में गजानन लक्ष्मी को ले जाता है तब मूक त्याग व आदर्श का प्रतीक बना रहता है । मंत्री दिनकर आधुनिक युग के मंत्री-वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । वह मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त हैं । गजानन कुटिल प्रेमियों का प्रतीक याने खलनायक है । "चौदहफेरे" का कर्नल

1 - "कैंजा" - शिवानी - पृ॰ 29

आधुनिक परिवेशों में रहते हुए भी अहल्या के स्वतंत्र व्यक्तित्व को नकारता है । यहाँ तक कि विवाह के संबंध में उसने अहल्या की सम्मति की आवश्यकता भी न समझी । इस प्रकार द्वैत (ड्युअल पर्सनालीटी) है । सर्वेश्वर का चरित्र एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । "गैंडा", सुरंगमा" तथा "चौदह फेरे" के नायक पर स्त्री गमन करते हैं । यहाँ तक कि "चौदह फेरे का नायक कर्नल अपनी पत्नी की उपेक्षा करके मल्लिका सरकार को पत्नी के सभी अधिकार सौंप देता है ।

"चौदह फेरे", "मायापुरी" के पीले बाबा तथा "भैरवी" और "किशनुली" में ढोंगी बाबाओं पर, उनके चरित्र पर प्रकाश डाला है । परमानंद तथा उसका शिष्य बाहर से पुण्यात्मा किंतु जलील है जो अहल्या को देखकर अपनी वासना तृप्त करके उसे बेच देने की बात करते हैं ।" [1] इसी प्रकार "भैरवी" में भी आध्यात्मिक अघोरी साधकों का पर्दाफाश किया है ।

"पूतोंवाली" के अंतर्गत पार्वती एक आदर्श पत्नी व माता का चरित्र है । विवाह के पश्चात् पूरे दस-दस साल तक भी पति के एक शब्द . को भी वह नहीं सुन पायी थी । अर्थात् पति ने एक शब्द भी नहीं बोला ऐसी अंतर्वेदना को झेलती चूपचाप पति के चरणों में दासी बनी रहती पत्नी की अनोखी कहानी है । पार्वती के सभी पुत्र एक के बाद एक पढ लिखकर चले गये और उसे बिसरा गये फिर भी वह सच्चे अर्थ में पूतोंवाली कहलाया । शिवसागर और बदरी जी का भी अनोखा पात्र

1 - "चौदह फेरे" - शिवानी पृ. 134

है । बदरी का चरित्र ग्रामीण और गँवार सा है । नौकर चाकर और कोठी के मालिक पुत्र के यहाँ भी गँवार व्यवहार करता है जैसे दातून को घंटे तक चबाते हुए कान में जनेऊ डाल कर घूमते रहना और लोन की झाड़ियों के पीछे लघुशंका जाना तथा रोटियों पर रोटियाँ दागना, इससे भी आगे बिस्तर में ही रात को पिशाब करना आदि ।" [1]

"अतिथि" में जया का एक आदर्श पात्र है । वह स्वयंसिद्धा है । यह एक तटस्थ और स्थिर पात्र है । किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में वह विचलित नहीं होती है । पति के परिवेश से त्रस्त होकर भी अपना सम्मान नहीं गँवाती है तथा ताई के द्वारा अन्य नवयुवक के साथ विवाह करवाने की योजना का भी वह विरोध करती है । आई॰ सी॰ आई॰ में प्रथम आकर कलक्टर बनकर दूर जाकर रहती है किंतु ऐसी अवस्था में भी ससुर के प्रति एवम् अपने पति कार्तिक के प्रति सम्मान और प्रेम है ।

चंद्रा का चरित्र एक माँ होते हुए भी कार्तिक और लीना को कुसंस्कार, व्यभिचार, दुर्व्यसन आदि से नहीं रोक पाती है और उनका सर्वनाश करवाती है । यद्यपि माधवबाबू के परदेश जाने पर नशे की गोलियों के कारण लीना की मृत्यु के समय वह बड़ी कुनेह से कार्य करती है ।

1 - पूतोंवाली" - शिवानी - पृ॰ 44

निष्कर्षत: शिवानी के नारी पात्र निर्बल नहीं है किंतु प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने वाले है । राजनीति, समाज• धर्म, परिवार व्यवसाय और सभी क्षेत्रों में नारी ही त्रासद बनावटों की हिस्सेदार है । खूबसूरत चेहरे, निष्कपट आस्थाओं, पवित्र आचरणों और अनोखी दृढता से युक्त ये नारियाँ शिवानी में अनन्त अभिशाप भोगती है ।

"श्मशान चम्पा", "मायापुरी", "अतिथि", "कस्तुरीमृग" आदि के चरित्र इसी आधार पर अवलंबित है । चम्पा, मधु-कर सतीश, शोभा, और विषकन्या ये सभी चरित्र नियतिग्रस्त है । "रतिविलाप में परस्पर विरोधी दो चरित्र है । एक नारी जो जीवनभर अरमान भरी जिन्दगी गुजारती है फिर भी अपने विवेकशील व्यवहार से स्वयं को पथभ्रष्ट होने से दूसरों को रोकती है । एक और चंचल चतुर अपरूप नारी होने पर भी मनमोहिनी छटा बिखेर कर निर्मम हत्यारिन है तो दूसरी और साहसी प्रतिभावान, धैर्यवान व्यवहार कुशल और उदार महिला हैं । वह हत्यारिन हीरा को देखकर भी उसे क्षमा दान देती है क्योंकि उसके पुत्र की आँखों में अपने श्वसूर की छबी देखती है ।

कथानक और चरित्र चित्रण दोनों ही के पूरक रूप में संवाद या कथोपकथन का विशेष महत्त्व है । इसकी महत्वता प्रतिपादित करते हुए श्री नारायण अग्निहोत्री जी कहते हैं कि "बिना संवाद के चरित्र - चित्रण ऐसा ही है जैसे बिना खिडकियों और दरवाजों

। -

का कथरा ।"[1] इसकी पुष्टि करता हुआ प्रेमचन्दजी का ही कथन है कि "उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाए उतना ही अच्छा है । किसी भी चरित्र के मुँह से निकले प्रत्येक वाक्य को उसके मनोभावों और चरित्र पर कुछ प्रकाश डालना ही चाहिए । बातचीत का स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल सरल और सूक्ष्म होना आवश्यक है ।"[2]

शिवानी के उपन्यासों में कथोपकथन :

कथोपकथन परिस्थिति और पात्र के अनुकूल होना चाहिए । संक्षिप्तता कथोपकथन का प्राण है । शिवानी के अधिकांश कथोपकथन स्वाभाविक, सरल और चुस्त हैं किन्तु कुछ स्थानों पर उन्होंने लम्बे-लम्बे कथोपकथन का प्रयोग किया है फिर भी उनकी विशिष्ट व्यंग्यात्मक और पात्रों की मानसिक स्थिति का उद्घाटन करने वाली शैली के कारण पाठक को अरुचिकर नहीं लगता है ।

शिवानी ने अपने उपन्यासों में लम्बे कथोपकथन के साथ-साथ नाटकीय, रमणीय, कलात्मक, तथा चरित्र चित्रण में सहायकारी और कतिपय अन्य परिवेशीय भाषाओं के कथोपकथनों का भी उपयोग किया है ।

1 - "उपन्यास कला के तत्व - डॉ॰ श्री नारायण अग्निहोत्री-पृ॰ 111
2 - "कुछ विचार" भाग- 1 - प्रेमचन्द पृ॰ 55

UNIVERSITY LIBRARY

लम्बे कथोपकथनों द्वारा शिवानी ने पात्रों की मानसिक क्रियाओं का मार्मिक अंकन किया है । कथोपकथन में स्वाभाविकता और मनोवृत्ति का ध्यान रखा गया है अतः लम्बे कथोपकथन भी आदर्श के उपस्थापन और व्यक्तित्व के प्रकाशन में सहायक सिद्ध होते हैं । उदाहरण के कुछ अंश प्रस्तुत है ।

"अपने जन्म का विवरण पन्ना के मुँह से सुनकर विद्युत्रंजन के सामने ही कृष्णकली कहती है "चिन्ता मत करो माँ, तुम्हें नहीं सुधारना होगा .... । वाह, अच्छा किया जो बिना "पिक्चर" देखे ही लौट आई, नहीं तो आज अपने ही घर में चल रही ऐसी इण्टरेस्टिंग मैटिनी मिस कर जातीं ।"[1] "आज वही अकृतज्ञ मुझे दूध की मक्खी-सी निकाल कर दूर फेंक रही है।....... एक बार जी में आता है, साफ-साफ कह दूँ, छोकरी अपने को हूर समझती है, इठलाती फिरती है - तेरा पिता कोढी है और माँ कोढिन । जाने किन गलियों में भीख माँगते फिरते होगें ।....... कैसी मूर्खता कर बैठी हूँ मैं ? ऐसे माता पिता की इस दुर्दमनीय सन्तान को मैं क्या कभी सुधार पाऊँगी ? "[2]

"श्मशान चम्पा" में भी कथोपकथन लम्बे हो गए हैं जैसे सेनगुप्त का अपनी पत्नी की बीमारी के सन्दर्भ में चम्पा को दिया गया बयान तथा मिनी का चम्पा के सामने सेनगुप्त की आदतों का रहस्योद्घाटन करने वाला कथोपकथन पौने दो पृष्ठ तक चलता है ।[3]

1-2 : "कृष्णकली" - शिवानी - पृ• 62
3 : "श्मशान चम्पा-शिवानी-पृ• 59-60

इसी प्रकार सुरंगमा के गजानन्द जोशी की स्थूल वार्ता से पाठक ऊब जाते हैं ।" [1] "रथ्या" में तो जब वसन्ती अपना अतीत दुहराती है तब वह लगभग सात पृष्ठ लम्बा चलता है ।" [2]

इन उपन्यासों की अपेक्षा "भैरवी", "रतिविलाप", "कैंजा", "भैंडा", "विश्नुली" तथा "माणिक" आदि उपन्यासों में कथोपकथन की सूक्ष्मता तथा कलात्मकता प्रस्तुत हैं। इनमें नाटकीय तत्वों से रोचकता, पात्रों के सरल प्रश्न, जिज्ञासा तथा मनोभावों का चित्रण देखने मिलता है । जैसे - सेविका चरन सहज प्रश्न करती है, "अच्छा, अब बताओगी, तुम रेल-गाडी से खुद ही कूद गई थीं या किसी ने ढकेल दिया था ? - कदली ग्रास सहसा चन्दन के गले में अटक गया।" [3]

रात्रि में सबके सो जाने के बाद पर्वतारोही दल का सदस्य ग्यारह बजे दरवाजा खुलवाकर राजेश्वरी से कहता है, "क्षमा कीजिएगा माँजी, मुझे असल में बहुत पहले ही कह देना चाहिए था "कैन आई स्लीप विथ योर डोटर ?" [4] इतने कटु सत्य को इतने सरल शब्दों में सुनकर पाठक के रोंगटे खडे हो जाते हैं । किंतु परिस्थिति की रहस्यमयता देखने योग्य है । वह वास्तव में लडका नहीं था, सोन्निया थी । प्रमाण देने के लिए उसे विवस्त्र होकर शरीर दिखाना पडता है । अपनी मोटी चोटी खींचकर अपने सुडौल वक्षस्थल पर लटका कर वह कहती है, "काली पद्मनाग है सरकार गोरखपुर के जंगल से पकडा है ।

1 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ. 78, 79, 85, 91, 92
2 - "रथ्या" - शिवानी - पृ. 30 से 37
3 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 21
4 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 93

किसी को सूँघ ले तो अभागा वहीं तड़पकर जान दे दे । जय गुरु गोरखनाथ ।"[1]

शिवानी अभिजात वर्ग की बोल चाल की भाषा में लिखती है । इसलिए इस वर्ग की व्यवहृत अँग्रेजी में पूरे के पूरे वाक्य भी वे प्रयोग में लाती है । साथ ही हिन्दी मिश्रित अँग्रेजी बातचीत तथा बंगाली एवम् कुमाऊ भाषाओं के पूरे के पूरे वाक्य प्रयोग सफलता से किये हैं । जैसे कि "भैरवी" में "लुक एट हर ममी, कहा था न मैंने । इज्न्ट शी ए ब्यूटी ?"[2]

"वेरोनिका विल यू प्लीज़ कम इन ?[3]

इसके अतिरिक्त "चौदह फेरे", "श्मशान चम्पा", "रथ्या", "किशनुली" आदि के ग्रामीण पात्रों के कथोपकथन भी उल्लेखनीय है । "महोब्बत", सुरंगमा आदि के बंगाली भाषा के भी उदाहरण प्रस्तुत है जैसे - बिमार लक्ष्मी पुत्री से कहती है, "आमा के विष दिच्छे डाकातरा मुकू, आमा के विष दिच्छे ।"[4] उस दिन माँ ने बड़े प्यार से छाती से लगाकर कहा, "खेये छीश मूक ? जा, धुमो ऐ बारे ।"[5]

गौहर मौसी का ही दिया हुआ नाम था राज लक्ष्मी ।उसे देखने ही उन्होंने ने राजा प्रबोधरंजन से कहा था, "लोक्षीर मत कपाल निये ऐशे छे प्रबोध राक्बे राजलक्ष्मी ।"[6] अर्थात् "लक्ष्मी का सा ललाट लेकर आई है प्रबोध उसे राजलक्ष्मी कह-कर ही पुकारना ।

1 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 98
2 - "वही" - शिवानी - पृ. 105
3 - "सुरंगमा" - शिवानी - पृ. 43
4 - "वही" - शिवानी - पृ. 33
5 - "वही" - शिवानी - पृ. 33
6 - "वही" - शिवानी - पृ. 16

शिवानी ने यथार्थ, रमणीय और नाटकीयता का समन्वय भी किया है । जैसे - "गुजराती लड़की रश्मि दवे आण्टी के पाल्ट्री फार्म की सबसे नई और फूहड डरपोक मुर्गी थी ।"

"कहिए, आप लोगों ने हाथ ऊँचे कर क्या हमें भी कार रोकने का आदेश दिया था ? और वह बड़ी दुष्टता से मुस्कराने लगी ।

जी हाँ ।.........

"ओह, "कली माइल स्टोन पर बैठ धूप का फैंटम चश्मा उतारकर रूमाल से पोंछती हँसकर बोली, "मैंने सोचा शायद हैंड्स अप करके हम चारों के सौन्दर्य से डरकर आप चारों स्वयं ही हथियार डाल रहे हैं ।" 1

कथोपकथन की समन्वित पद्धति का एक अच्छा उदाहरण और भी प्रस्तुत किया जाता है । जैसे - "अरी, किस पापी ने यह पत्थर मार दिया तुझे नाश हो उसका, ठठरी उठे अभागे की।"

"नहीं मैं नहीं गिरी, मुझे मारा ।" पगली की कैफियत में उन्माद का स्पर्श भी नहीं था ।

"हाय किसने मारा मेरी दुलारी बच्ची को ? कासी ने उसका धूल-धूसरित चिबुक स्पर्शकर बड़े लाड से पूछा ।

1 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ॰ 70

"तेरे बाप ने ।" कह कर बेहया फिर ठी-ठी कर हँसने लगी ।"[1]

शिवानी ने पात्रों के विचार उनके मानसिक अन्तर के अनुकूल हो इस बात पर भी ध्यान रखा है किन्तु कतिपय असंभाव्य के दोष की ओर भी संकेत करता कथोपकथन है । जैसे "भैरवी" में अनपढ पात्र चरन दासी कहती है कि उसने सुना, "शिव जिसे शक्ति कहकर पुकारते हैं, सांख्य पराप्रकृति, सूर्य-पूजक....... मैं तुम्हारी शिव शक्ति ।"[2] यद्यपि चरन एक ही बार सुनकर अनपढ होते हुए भी इतने लम्बे प्रलाप को याद रखकर कह सुनाती है यह असंभव है ।

शिवानी के कथोपकथन की एक विशिष्ट व्यंग्यात्मक छटा भी दृष्टव्य है - "क्योंजी ऐसे क्या देख रही हो ? खाओगी क्या ? आज तो खूब होश में हो क्यों ? फिर उसने व्यंग्यात्मक हंसी से उसे छेद दिया और एक रोटी ऐसे थमाई जैसे दीन भिक्षुक की झोली में अनिच्छा से अपने मुख का ग्रास डाल रही हो, किन्तु चन्दन की क्षुधा के विकराल सर्वभक्षी रूप के सम्मुख आत्म सम्मान किसी कायर मित्र की ही भाँति दुबककर अदृश्य हो गया था । उसने लपक कर रोटी थाम ली ।"[3]

शिवानी के उपन्यासों में भाषा शैली का प्रयोग :-

शैली उपन्यास .. साहित्य का मुख्य अंग है । प्रसाद गुण उपन्यास का मुख्य गुण होना चाहिए तथा ओज और माधुर्य

1 - "किशनुली" - शिवानी - पृ॰ 22, 23
2 - "भैरवी" - शिवानी - पृ॰ 38
3 - "वही" - शिवानी - पृ॰ 22

का विषयानुकूल यथा स्थान समावेश होना अपेक्षित है । शैली के द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति को अधिक प्रभावशाली और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है । उपन्यासकार जिस ढंग से अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है उसे शैली कहते हैं । इसकी महत्वता को दर्शाते हुए बाबू गुलाबराय कहते हैं - "खाद्य - सामग्री चाहे कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, किन्तु जब तक उसको सजा-सम्हाल कर न रखा जाएगा वह ग्राह्य न होगी । काव्य में शैली का वही स्थान है, जो मनुष्य में उसकी आकृति और वेश भूषा का है ।" [1]

प्रत्येक लेखक की अपनी अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैली होती है और वह शैली चाहे वह वर्णन शैली हो या भाषा शैली हो और चाहे फिर उसमें कहावतें और मुहावरे हो, वे उस लेखक की प्रत्येक कृति में कुछ साम्य रखते हैं । सुप्रसिद्ध आंग्ल आलोचक ब्लेक मूलर का कथन शिवानी की भाषा - शैली के सन्दर्भ में शत-प्रतिशत खरा उतरता है ।:- "भाषा केवल हमारे भावों तथा विचारों का वाहन नहीं है, जिसे ठोक-पीटकर हर समय काम में लाया जा सके । उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व और वातावरण होता है, जो सूक्ष्म दृष्टि से देखा जा सकता है । हमारी ही तरह उसकी भी शक्ति, इच्छा होती है और उसके भी संस्कार होते हैं ।" [2]

सामान्यत: उपन्यास में चार शैलियों का उपयोग होता है, वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक और डायरी शैलियां ।

1 - "काव्य के रूप" - बाबू गुलाबराय - पृ॰ 183
2 - "लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर" - ब्लेक मूलर - पृ॰ 21

शिवानी जी भी अपनी शैली के विषय में कहती है - "अपने उसी परिवेश का सही चित्र प्रस्तुत करने में जो शैली, बड़ी स्वाभाविकता के साथ स्याही की ही भाँति मेरी लेखनी ने सीख ली है, ... मैं डो. जोन्सन की पंक्तियों में अटूट विश्वास रखती हूँ "दन्स अ मैन हैज डेवलप्ड अ स्टाइल, ही कैन सेल्डम राइट इन एनी अधर वे । लेखक जिस शैली को एक बार अपना लेता है उसे छोडकर फिर किसी नई शैली में लिखना उसके लिए असंभव नहीं तो कठिन तो अवश्य होता है ।" [1]

शब्द चयन : शिवानी ने अपनी रचनाओं के अंतर्गत यथास्थान संस्कृत, अँग्रेजी, पहाडी, बंगाली और हिन्दी के ठेठ शब्दों का प्रयोग किया है । उदाहरण के लिए :- इजा, चेली, सैलाव, कन्दरा, भिन्सार, भकोस, अधन्ना, चुगद, बजाई, तफरी, और चिरौरी, आदि । इन शब्दों का प्रयोग, "चौदह फेरे", किशनुली", "भैरवी", "मायापुरी", आदि उपन्यासों में हुआ है । ठेठ शब्दों के प्रयोग में कहीं-कहीं क्लिष्टता भी आ गई है । जैसे - चपेटाघात, कर्णमर्दन, देहवल्लरी, इंजना रूद्, स्कन्ध-स्पर्श, भैसैकर आदि । पहाडी शब्दों की भाँति ही अँग्रेजी - बंगला के शब्द भी लेखिका एवम् पात्रों द्वारा प्रयुक्त हुए हैं । कतिपय अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग उचित कहा जायेगा जिन्हें अभिव्यंजना की दृष्टि से प्रयुक्त किया गया है और जो हिन्दी में चलन में लाये जाते हैं । जैसे :- "पूर्व निर्धारित कार्यक्रम का टेप......।" [2]

1 - "रेखाचित्रों की भूमिका" - शिवानी - पृ. 12
2 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ. 189.

"उसका कण्ठ स्वर ट्रान्स मीटर फेल हो गये रेडियो जैसा ....।[1] इसके अतिरिक्त हेरस्टाइल, सर्च-लाईट, लैटैस्ट आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग है । लेखिका ने कई ठेठ पहाडी शब्दों का अर्थ भी कोष्टक में दिया है । जैसे - "बजार्ई ‌‌(नानी), चेली (बेटी), बजा (माँ), चूडकन्त (गर्म दूध) कंच (चांदी की कटोरी), छर्रख्या (सुखाया हुआ नमकीन गोश्त), रंपा (पागल) ध्याश्वी (एक नशीला द्रव्य), लुता (छिक्कारना) मोईंटो (चटाइया) आदि" ।[2]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि शिवानी की भाषा का शब्द भण्डार व्यापक और समृद्ध है । उन्होंने अभिव्यंजना को सशक्त करने वाले कृत्रिम शब्दों के बजाय स्वाभाविक शब्दों का यथास्थान प्रयोग किया है । उनकी भाषा पात्रों के अनुकूल प्रयुक्त हुई है ।

शिवानी की शैली में सजीवता और प्रवाह पूर्णता दृष्टिगत है । उसमें प्रसाद, ओज, और माधुर्य के परम्परा-नुमोदित गुण विद्यमान हैं । "आन्ध्र खद्दर की आफ व्हाइट वही साडी जिसे पहन उसने मद्रास हेण्डलूम एम्पोरियम में देश-विदेश से एकत्रित हुई पच्चीस मोडलों की सलोनी सूरत पर झाडू फेर कर रख दिया था । एक ओर लाल जरी की कन्नी, दूसरी ओर काले मिट्टी पाड में, जरी की

1 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ० 189, 176
2 - "भैरवी" - शिवानी - पृ० 82-85.

चमकती विद्युत-वह्नि जो किसी बिजली की ही भांति गिरनेवाले को विस्फोट से पहले ही भस्मीभूत कर देती थी । कानों में वह केवल हीरे के दमकते कर्णफूल ही पहनती थी । इन्हीं कर्ण फूलों की स्वामिनी बनने के लिये उसे जान हथेली पर रख चलती ट्रेन से कूदना पड़ा था ।" 1

उपर्युक्त उदाहरण सजीवता को स्पष्ट करता है । उनकी प्रवाह पूर्ण शैली का अद्वितीय उदाहरण भी प्रस्तुत है । "दुबले-पतले शरीर से कैशोर्य की लुनाई स्वयं ही पिघलकर बह गई थी । शरीर भरकर निखर आया था, आंखे बड़ी न होने पर भी घनी बरौनियों के औदार्य से शरबती बन गई थीं जैसे नैनीताल की झील में प्रति-बिम्बत कगार पर खड़े - विलो वृक्षों की श्याम हरित द्युति, उसे अपनी स्निग्ध आभा से और भी मोहक बना देती है । ऐसे ही रेशमी पक्ष्मों की छाया उन चंचल पुतलियों को एक अनूठा मायाविनी आकर्षण प्रदान कर गई थी ।"2

इसमें प्रवाहपूर्ण शैली के समतल स्निग्ध रूप के साथ यथेष्ट प्रभावात्मकता है । शैलीगत मर्मस्पर्शिता का चरमोत्कर्ष रूप उनके साहित्य में अन्यत्र भी प्राप्य है ।

शिवानी की शैली मनोभावों के अनुरूप अपना वेश-विधान करती है । जहाँ कोमल और मधुर भावों की व्यंजना है ।

1 -"कृष्णकली" - शिवानी - पृ॰ 78
2 -"श्मशान चम्पा- शिवानी पृ॰ 98

वहाँ शैली उसी के अनुरूप कोमल और मधुर है। जहाँ उग्र भावों की व्यंजना है, वहाँ शैली का ओज देखते ही बनता है । "कैंजा", "भैरवी," "कृष्णकली", "अतिथि" आदि में इसके अच्छे उदाहरण उपलब्ध है ।

शैली की प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिये शिवानी ने उपमा उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का भी अच्छा प्रयोग किया है । ये उपमाएँ सर्वथा नवीन हैं, जीवन से ली गई हैं । और प्रभावतीव्रता में अपूर्व हैं । जैसे -

"वह जानती थी कि अम्मा चाहे मुँह से कुछ न कहें, किन्तु अपनी खतरनाक आँखों के डमरु बजाकर उसे शाखामृगी-सी ही उठा-बैठा सकती है।" [1]

"शोभा की बड़ी - बड़ी तश्तरी-सी आँखों से आँसू डबडबा आए ।"[2]

उपमा की भाँति ही उत्प्रेक्षा भी जीवन से ली गई है और वर्तमान समाज से सम्युक्त है । वैसे उपमा की तुलना में उत्प्रेक्षाओं का इतना प्रयोग नहीं, जितना जहाँ भी है वहाँ सूक्ष्म और मार्मिक है । उदाहरणार्थ - "बहुत दिनों के बाद मानों किसी ने उसके मकबरे की जंग लगी खिड़की को खोल ताजी बयार के मंदिर झोंके से उसे उल्लसित कर दिया था ।"[3]

1 - "भैरवी" - शिवानी - पृ. 67
2 - "मायापुरी" - शिवानी- पृ. 83
3 - "माणिक" - शिवानी - पृ. 15

शिवानी ने समाज के पाखण्ड और ढोंग पर भी व्यंग्य - प्रहार किया है ऐसी भी उक्तियाँ उपलब्ध है । यथा - "भाड में जाए तुम्हारे यजमान और तुम्हारा समाज । क्या अपनी इस अवस्था के लिए अकेली किसना ही अप-राधिनी है ? जिस हरामजादे कमीने ने इस नाबालीग असहाय उन्मादग्रस्त छोकरी का सर्वनाश कियाहै उसे ढूंढकर पकड़ लाए तुम्हारा समाज तब मैं जानूं । दोष किसी का और दण्ड कोई और भोगे, वहाँ का न्याय है जी ? " ।

"कितना क्रूर है हमारा समाज इसी अभागे नवजात शिशु का गला घोंट यदि कपड़े में लपेट किसी घूरे में फेंक दिया जाता तो शायद समाज को आपत्ति न होती, किन्तु किसी दयालु, सहृदया सन्तानहीन गृहिणी ने उसे अपनी रीती गोद में समेट लिया तो समाज ने बन्दूक तान ली ।"'2

इस प्रकार अन्य हास्य - व्यंग्योक्ति के भी कई उदाहरण हैं । जैसे - "कहाँ पान के पत्ते से फेरे जाते थे और अब उन्हीं रियासती रजवाडों की हालत है कि रियासत है पर "प्रीवीपर्स" छिना जा रहा है । नाम से अब भी जमाई राजा है, पर कोई एक प्याला चाय को भी तो नहीं पूछता ।"3

1 - "किशनुली" - शिवानी - पृ. 27
2 - "किशनुली का ढाँट- " शिवानी - पृ. 28
3 - "कृष्णकली" - शिवानी - पृ. 118

शिवानी की शैली के बारे में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार का मन्तव्य है, " उपन्यास की शैली पुराने ढंग की है, कुछ कुछ पिछले बंगाली सामाजिक उपन्यासों की ढंग की । पर न सिर्फ उपन्यास में खूब अच्छी पकड़ है अपितु लेखिका कुछ सजीव पात्रों का निर्माण करने में भी सफल हुई है ।चित्रण और कथानक में कुछ अनावश्यक रूप से गहरे "शैड" देने का प्रयास लेखिका ने किया है ।"[1]

शिवानी ने मुँहावरों, कहावतों तथा सुक्तियों का भी प्रयोग अपनी रचनाओं के अंतर्गत प्रचुर मात्रा में किया है। यथा -

चुल्लूभर पानी में डूब मरना, रमते जोगी होना, बोरिया बिस्तर बाँधना, हेलमेल बढ़ाना, घर फूँकना, दाल भात में मूसरचन्द होना, गिरगिट सा रंग बदलना, तर्जनी पर नचाना, आग बबूला होना, नाक काटना, पराये पिके पकवान पर हाथ मारना आदि जैसे अनेक मुँहावरों का प्रयोग पद-पद पर किया है ।

कहावतें :- §1§ "ऐ शाबाश, कटोरे पे कटोरा बेटा बाप से भी गोरा ।"[2]

§2§ "आप मगन्ते बामना, द्वार खड़े ज्मान" ।[3]

§3§ "आप डूबन्ते बामना, ले डूबे जजमान ।"[4]

1 - "आजकल" - अक्टूबर - 1961 - पृ० 46
2 - "भैरवी" - शिवानी - पृ० 77
3-4 "कृष्णकली" - शिवानी - पृ० 117, 205

4• जात का बछडा, औकात का घोडा, बहुत नहीं तो थोडा थोडा ।"[1]

5• बांज की लकडी टेठी भी तो तब भी भली है क्योंकि दप से सुलग जाती है ।"[2]

जैसी अनेक कहावतों का यथास्थान प्रयुक्त कर गद्य शैली सशक्त बनाया है ।

शैली के अंतर्गत अनुभवसिक्त सूक्तियों का प्रयोग भी शिवानी ने अपनाया है ।

(1) "प्रवन्चना का अन्त ही हार है ।"

(2) "समाज तो सगे भाई-बहिन के एकान्त वास को भी कभी अच्छी दृष्टि से नहीं देख सकेगा ।"

(3) "शैशव की स्मरण शक्ति प्रखर होती है ।"

(4) "मृत्यु शय्या पर पडा आदमी अन्याय करने की कोशिश भी करे तो उसकी अन्तरात्मा हाथ पकडकर उसे रोकती है ।"

(5) "रूप संगीत का शत्रु है ।"

(6) "सगे सहेदरा या सहोदरा जब कभी शत्रु बन उठते हैं, तो उनकी शत्रुता हृदयहीन अनात्मविश्व शत्रु की शत्रुता से भी अधिक घातक होती है ।"

1 -"भैरवी" - शिवानी - पृ• 52
2 - "किशनुली" - शिवानी - पृ• 19

शिवानी ने प्राकृतिक उपादानों के अंतर्गत प्रकृति के बिम्बों और प्रतीकों के रूप में भी बड़ा सफल प्रयोग किया है । उदाहरणार्थ :-

§1§ "शान्त कण्ठस्वर पानी में भीगे पतले लपलपाते चाबुक की सी सड़ाक के साथ रम्भा की अपराधी पीठ पर पड़ा ।"

§2§ "उसका कण्ठ स्वर ट्रांसमीटर के फेल हो गए रेडियो से विलीन होने स्वर की भांति कुछ क्षणों तक विलीन हो गया ।"

§3§ "उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि प्रबल प्रभंजन के "सायक्लोनी" तेजी से आये झोंके ने उसकी विचित्र पोशाक को पैराशूट-सा फुला दिया । बरसाती के कपड़े से बने कोट, जिन में मशीनी सकर पारे काटकर शायद रुई की मोटी-मोटी तहें बिछा दी गईं थीं ......। हवा से फूलकर गैस के गुब्बारों-से तन गए ।"

शिवानी की भाषा की विशिष्ट शैली है चित्रात्मकता । चरित्रों के परिवेश, वातावरण, रहन-सहन और वेशभूषा आदि के सूक्ष्म चित्रण चित्रित करने में उनकी लेखनी बेजोड़ है ।

"चौदह फेरे" उपन्यास के अंतर्गत भी कुमाऊं आँचल का मधुर चित्र प्रस्तुत किया है जो हमारी आँखों के सम्मुख सजीव हो

उठता है । यथा -

"सीढ़ी से बने खेतों पर नई फसल का तारुण्य गदरा रहा था । छोटी-छोटी पथरीली छतों पर कहीं सोलह गजी काले लहँगे और रंग-बिरंगे दुपट्टे सूख रहे थे, कहीं स्तूपाकार सूखी सुनहरी घास के गुट्ठरों पर पड़तीं अस्तगामी सूर्य की मन्द रश्मियाँ उन्हें तपे सोने-सा दमका रहीं थीं ।" [1]

निष्कर्षत: शिवानी की भाषा-शैली विशिष्ट है । इनकी शैलीगत विशेषता के सम्बन्ध में ठाकुर प्रसाद सिंह कहते हैं, - "सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में बाणभट्ट की "कादम्बरी" का छोटे से छोटा अंश भी अलग से पहचाना जा सकता है वैसे ही जैसे आप हिन्दी के गद्य लेखकों की भीड़ में श्री हजारी-प्रसाद द्विवेदी या उनके स्तर के शैलीकारों को अलग से पहचान लेते हैं । शिवानी के सम्बन्ध में भी यह बात बिना हिचक से कही जा सकती है ।" [2]

अंत में कुमारी शशीबाला पंजाबी के निम्नलिखित कथन के साथ इस अध्याय की समाप्ति करेंगे ।

"उपन्यास पढ़ते ही पाठक को ज्ञात हो जाता है कि वह अमुक लेखक या लेखिका का उपन्यास पढ़ रहा है । लेखक को पहचानने के लिए या उसकी कृति को पहचानने के लिये उसकी शैली ही सहायक बनती है । इसीलिए कहा गया है, " स्टाइल इज द मैन हिमसेल्फ" और शिवानी जी के विषय में यह उक्ति पूर्णत: चरितार्थ होती है ।" [3]

1- "चौदह फेरे" - शिवानी - पृ० 102
2 - "मेरी प्रिय कहानियाँ" की भूमिका - ठाकुर प्रसाद सिंह - पृ० 7
3 - "शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - कु०शशिबाला पंजाबी पृ०9।